

यीशु मसीह का स्वर्गारोहण

जब नबी एलियाह स्वर्ग पर उठा लिया गया, तब उसके उत्तराधिकारी एलीशा ने एलियाह की सामर्थ्य का दूना भाग चाहा। उसे पाने की शर्त उल्लेखनीय है: केवल तभी, जब एलीशा एलियाह को स्वर्ग पर उठाए जाते हुए देखे, उसे यह भाग मिलेगा। इसलिए एलीशा बहुत ध्यान से रहा कि उठाए जाने का यह क्षण उससे छूट न जाए। वह क्षण उससे नहीं छूटा, और वह एक प्रभावशाली दृश्य का साक्षी बना (2 राजाओं 2:9-14)।

आज भी यह उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि प्रभु का स्वर्गारोहण हमसे छूट न जाए। निश्चय ही वह बहुत पहले हो चुका है और अब छूट नहीं सकता। परन्तु यीशु के स्वर्गारोहण के अर्थ पर कम ही ज़ोर दिया जाता है। उद्धार-इतिहास में उसका महत्वपूर्ण स्थान है, जैसे क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान का।

महिमा में ऊपर उठाया गया

भक्ति के उस भेद में, जो विश्वास का आधार है और जो मसीह के व्यक्तित्व में हमारे लिए खोला गया है, यह बात भी शामिल है कि वह महिमा में ऊपर उठाया गया।

और इसमें संदेह नहीं कि भक्ति का भेद महान है: परमेश्वर देह में प्रकट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, जातियों में उसका प्रचार हुआ, संसार में उस पर विश्वास किया गया, महिमा में ऊपर उठाया गया। 1 तीमुथियुस 3:16

केवल इतना ही नहीं कि महिमा वह स्थान थी जहाँ वह ऊपर गया। स्वर्ग में उसका पूरा प्रवेश महिमा में लिपटा हुआ था। परमेश्वर की महिमा के बादल ने उसे ग्रहण किया और स्वर्ग में उसके प्रवेश के लिए उसका संगी-रक्षक बना।

वह बादल में ऊपर उठा लिया गया:

और यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। प्रेरितों के काम 1:9

मैं विश्वास करता हूँ कि प्रभु का यह स्वर्गारोहण एलियाह के उठाए जाने से कम प्रभावशाली नहीं था। यह पिता का पुत्र है, जिसने अपने प्राण देकर अपना मिशन पूरा किया, जो अब स्वर्ग में प्रवेश करता है, राज्याभिषेक के लिए ऊपर चढ़ता है, ताकि परमेश्वर पिता उसका स्वागत करे। उसके स्वर्गारोहण के साथ उसका सिंहासनारोहण आरंभ होता है। यीशु, तुच्छ समझा गया नासरी, उसके तुरंत बाद प्रभु और मसीह ठहराया जाता है। अब वह पिता के सिंहासन पर विराजमान होता है। एक मनुष्य, जो परमेश्वर का पुत्र है, पहले मनुष्य के रूप में स्वर्ग में, परमेश्वर के सिंहासन-कक्ष में प्रवेश करता है, और उस सारे आदर, उत्साह और प्रशंसा के साथ ग्रहण किया जाता है और उसका स्वागत होता है, जो एक पिता अपने पुत्र को दे सकता है। स्वर्ग इस अनोखे दृश्य का साक्षी है: यीशु का उस स्वर्गीय राज्य में लौटना, जहाँ से वह निकला था (यूहन्ना 3:13; 6:62)। पुत्र फिर से घर आता है और कहता है:

जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहले मेरी तेरे साथ थी। यूहन्ना 17:4, 5

इससे पहले भी हम उसे यह कहते सुनते हैं:

जब वह बाहर चला गया, तो यीशु ने कहा: अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है। यदि परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है, तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा, और तुरन्त करेगा। यूहन्ना 13:31, 32

स्वर्गारोहण, जो पित्तुकुस्त के पर्व से 10 दिन पहले और उसके पुनरुत्थान के 40 दिन बाद हुआ, उसकी महिमा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। हम स्वर्ग के उस आनन्द की कल्पना कर सकते हैं, जब हमारे प्रभु का, हमारे अग्रदूत के रूप में, स्वर्ग में स्वागत होता है।

विजय और जयजयकार

स्वर्गारोहण उसकी विजय का प्रमाण है। युद्ध लड़ा जा चुका है, लड़ाई जीती जा चुकी है। और स्वर्ग उसे वापस चाहता है:

तब प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।
मरकुस 16:19

वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और स्वर्गदूत, अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं। 1 पतरस 3:22

जो उतरा, यह वही है जो सारे आकाश से भी ऊपर चढ़ गया, ताकि सब कुछ परिपूर्ण करे। इफिसियों 4:10

यदि उसका पुनरुत्थान ही पूरे किए गए छुटकारे का प्रमाण था, तो ब्रह्मांड में सर्वोच्च आदर का स्थान ग्रहण करने के द्वारा यह अंतिम रूप से मुहरबंद हो गया कि परमेश्वर के मसीह ने परमेश्वर की सब माँगों को पूरा किया है, हाँ, उनसे बढ़कर किया है। वह स्वेच्छा से नीचे उतरा, हमारे समान जीया, दूसरों के लिए पापी की मृत्यु मरा, पृथ्वी के निचले स्थानों में उतरा।

वचन बार-बार उसके उतरने और चढ़ने की बात करता है। यही अनंत दूरी, यही असीम दीनता थी जो परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए आवश्यक थी। और उसके बाद उसका ऊँचा किया जाना भी उतना ही असीम है, इतना ऊँचा और महान कि कोई मनुष्य कभी वहाँ तक नहीं पहुँच सकता था। और यह साँस रोक देने वाली बात है कि क्योंकि उसने अपने आप को इतना दीन किया, इसलिए वह हमारे लिए स्वर्ग खोलता है। उसने केवल मार्ग ही नहीं खोला, बल्कि हम उसमें अभी से वहाँ साथ बैठाए गए हैं।

सिंहासन पर उसके स्थान के आदर को केवल वही आँक सकता है जो उसकी गहरी दीनता को अनुभव करता है।

ताकि वह सब कुछ परिपूर्ण करे! ऐसा लगता है मानो स्वर्ग के हर कोने में उसका नाम पढ़ा जा सकता है, सब कुछ उसी से छाप पाए हुए और उसी से भरा हुआ है!

इसलिए इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। प्रेरितों के काम 2:36

यह वचन भी उसके स्वर्गारोहण और महिमा के उद्धार-ऐतिहासिक आयाम को स्पष्ट करता है। उसकी महिमा की पहुँच के परिणाम पूरे संसार के लिए हैं। इस्राएल का घराना परमेश्वर के उद्धार पर अपना एकाधिकार खो देता है; पूरा संसार प्रभु मसीह को, परमेश्वर के अभिषिक्त को, जान सकता है।

छुटकारा पूरा हुआ!

निश्चय ही परमेश्वर ने इस पर पुनरुत्थान में ही मुहर लगा दी थी। परन्तु यहाँ पुरानी वाचा के कभी न समाप्त होने वाले बलिदानों और सेवाओं की पृष्ठभूमि में उसके आत्म-समर्पण की अद्वितीयता और अनंत वैधता और उसके लहू के मूल्य को सीधे स्वर्गीय पवित्रस्थान में उसके प्रवेश से जोड़ा गया है।

और बकरो और बछड़ों के लहू के {या: लहू के द्वारा} नहीं, पर अपने ही लहू के {या: लहू के द्वारा} साथ एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया, और अनंत छुटकारा प्राप्त किया। इब्रानियों 9:12

गुलगुता पर उसने अपना लहू, अर्थात् अपना जीवन, दे दिया और आत्मिक रूप से अपने लहू के साथ परमपवित्र स्थान में प्रवेश किया। परन्तु इस वचन में बात यह है कि उसने एक ही बार प्रवेश किया, और महायाजक के समान फिर बाहर नहीं आया, और कि वह परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। छुटकारे की “सेवा” पूरी हो चुकी है, मसीह सिंहासन पर विराजमान है।

वह अनंत उद्धार का कर्ता, उसका रचयिता है। कौन यह साँस रोक देने वाला दावा कर सकता है, कौन कह सकता है कि उसने ऐसा कुछ पूरा किया है?

और सिद्ध बनकर, वह अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए अनंत उद्धार का कारण बन गया, और परमेश्वर ने उसे मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक कहकर संबोधित किया {या: पुकारा}। इब्रानियों 5:9

परन्तु केवल वही, जिसका परमेश्वर अभिवादन करता है और जिसका वह अपने पवित्रस्थान में स्वागत करता है, कि वह उसके सिंहासन पर, सबसे ऊँचे स्थान पर जो है, विराजमान हो। कैसा स्वागत! पुत्र 33 वर्ष के बाद लौटता है! और उसे “मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक” की आदर-उपाधि मिलती है!

पिता के संबोधन में यह वचन भी है: तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ! भजन संहिता 110:1

क्या एक अनंत और अटल छुटकारा पूरा होता, यदि परमेश्वर ने उसे इस रीति से ग्रहण न किया होता?

स्वर्ग में प्रतिनिधित्व – पृथ्वी पर उद्धार!

वह आकाशों से होकर गया है। यही उसका स्वर्गारोहण है, जो उसके महायाजक पद की शर्त है। वह एक विजय-यात्रा में ऊपर गया, जिसे सब स्वर्गदूतों ने देखा।

इसलिए जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो आकाशों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, बल्कि वह सब बातों में हमारे समान परखा गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें, कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे। इब्रानियों 4:14-16

वह केवल देखता ही नहीं रहता, जैसा हम अक्सर करते हैं; नहीं, वह हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना और विनती करता है कि हम महिमा की ओर जाने वाले सकरे मार्ग पर हार न मानें।

इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है। {या: उनका प्रतिनिधित्व करने को, उनके लिए माँगने को} इब्रानियों 7:25

परमेश्वर का आत्मा: जीवन का जल, सहायक और ऊपर से सामर्थ्य

पिन्तेकुस्त पर परमेश्वर का आत्मा पृथ्वी पर भेजा जाए, इसकी शर्त थी स्वर्ग पर चढ़ा हुआ और महिमा पाया हुआ मसीह!

जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक नहीं उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। यूहन्ना 7:38-39

परमेश्वर के आत्मा को महिमा पाए हुए मसीह की गवाही देनी थी, और लक्ष्य की ओर हमारे मार्ग पर इस महिमा को हमारे लिए जीवित बनाए रखना था – उस मार्ग पर, जो बाहरी रूप से मसीह की इस महिमा का कुछ भी पहचानने या अनुमान लगाने नहीं देता, जिसे वह हमारे साथ बाँटेगा और जो अभी से हमारी सम्पत्ति है। इसी अर्थ में हम ऊपर से सामर्थ्य की भी बात कर सकते हैं, जो ऊँचे पर की महिमा का सार और उसका प्रभाव है।

वास्तव में यही हमारा भेद है कि हमारा प्रभु अब महिमा का प्रभु है और कि हम ठीक इसी महिमा की ओर जाने वाले मार्ग पर हैं। वह हमें अपनी वह महिमा दिखाना चाहता है जो पिता ने उसे उसके पूरे किए हुए काम के कारण दी।

पिन्तेकुस्त पर यह आत्मा आया और चेलों के लिए ऊपर से सामर्थ्य बना। परन्तु हर कोई जानता है कि यही दिन, आत्मा के द्वारा ही, परमेश्वर की कलीसिया का जन्म-क्षण बना:

इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है: “प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।” {भजन संहिता 110:1} प्रेरितों के काम 2:33-35

उस दिन सब चेलों को एक ही आत्मा पिलाया गया और वे स्वर्गीय सिर से जोड़े गए। सिर और देह मसीह और कलीसिया के घनिष्ठ और अटूट संबंध का चित्र भी हैं और वास्तविकता भी। और सिर एक महिमा पाया हुआ मसीह होना था, उससे कम नहीं जो सब में सब कुछ परिपूर्ण करता है। स्वर्गारोहण से पहले का पुनर्जीवित मसीह नहीं, जब वह अभी पृथ्वी पर था, बल्कि वह, जिसका भविष्य है, वह जो इस महिमा को सदा के लिए कलीसिया के साथ बाँटना चाहता है। वह कहीं भी अब कलीसिया के बिना नहीं होगा, क्योंकि सिर और देह अविभाज्य हैं।

यह बात कि यीशु चेलों को छोड़कर चला जाएगा, उन्हें दुखी करने वाली थी। परन्तु गुरु उन्हें, और पूरे नए नियम के द्वारा हमें भी, स्पष्ट करता है कि उसका लौट जाना कितना महत्वपूर्ण और कितना नितांत आवश्यक था। इस खालीपन में परमेश्वर का आत्मा आएगा, उन्हें भर देगा और उनमें निवास करेगा। वह इसी आत्मा में फिर आएगा, जिसे मसीह का आत्मा भी कहा जाता है।

अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूँ, और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, “तू कहाँ जाता है?” परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक से भर गया है। तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। यूहन्ना 16:5-7

वह हमारे आगमन की तैयारी करता है!

स्वर्गारोहण का हमारी आशा से भी सीधा संबंध है। उसे जाना ही है, ताकि जहाँ वह सदा पिता के साथ था, वहाँ हमारे लिए एक निवासस्थान सजाए। वह स्वयं इस स्थान की देखभाल करता है, ताकि उसे हमारे लिए उपयुक्त बनाए। इसका क्या अर्थ होगा? वह हमारा इतना भला चाहता है, हमें कोई अनुमान नहीं कि हमारी क्या प्रतीक्षा कर रहा है!

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं; यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। यूहन्ना 14:2-3

तुमने सुना कि मैंने तुम से कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँ।” यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि [मेरा] पिता मुझ से बड़ा है। यूहन्ना 14:28

उद्धारकर्ता यहाँ हमें अपने हृदय में झाँकने देता है। वह घर जाना चाहता था! संसार में वह घर पर नहीं था। वह एक परदेशी था, एक सेवक जो अपने कार्य पर केंद्रित था। परन्तु वह चाहता था कि उसका घर हमारा भी घर बने।

इसलिए हम पृथ्वी पर नहीं, बल्कि उसके पास घर पर होंगे। जो कभी पृथ्वी के थे, ऐसे लोगों के रूप में हमें शायद ही किसी चीज़ की कमी खलेगी, भले ही ऐसे विचार कभी-कभी हमारे मन में चुपके से आना चाहें।

यीशु हमारे अग्रदूत के रूप में आगे गया है और वह अब पवित्रस्थान में है, जो उसी स्थान का वर्णन करता है जिसका पिता का घर करता है – निश्चय ही एक दूसरे पहलू से।

वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है, जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अग्रदूत के रूप में प्रवेश किया है। इब्रानियों 6:19-20

अग्रदूत के पीछे चलने वाले होते हैं, और वे हम हैं। वह विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला है। हम उसी मार्ग पर उसके पीछे चलेंगे जिस पर वह आकाशों से होकर गया है। हमें “लेने आने” की देखभाल भी वह स्वयं करेगा, ठीक वैसे ही जैसे निवासस्थान की सजावट की।

वह एक कार्य सौंपकर जाता है!

और उसने उनसे कहा: तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। मरकुस 16:15

गुरु के इन शब्दों को, जो उसने चेलों से विदा लेने के क्षणों में कहे, उद्धृत न करना एक चूक होगी। कार्य स्पष्ट है। यह मसीह के मुख में परमेश्वर की महिमा का सुसमाचार है (2 कुरिन्थियों 4:6)। यह अनंत उद्धार का संदेश है, जिसके लिए मसीह मरा, जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया। और परमेश्वर के सिंहासन पर उसका स्थान हमें जाने

का अधिकार देता है। यह किसी हारे हुए का संदेश नहीं है जिसका अंत क्रूस पर हुआ। यह उस विजेता का संदेश है जो फिर आने वाला है, जो जीवित है!

वह फिर आएगा!

हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा। प्रेरितों के काम 1:11

वह जैतून के पहाड़ पर खड़ा होगा:

और उस दिन उसके पाँव जैतून के पर्वत पर खड़े होंगे, जो पूर्व की ओर यरूशलेम के सामने है; और जैतून का पर्वत बीचोंबीच पूर्व से पश्चिम की ओर फटकर एक बहुत बड़ी घाटी बन जाएगा; और पर्वत का आधा भाग उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर हट जाएगा। जकर्याह 14:4

अब वह पिता के सिंहासन पर बैठा है। फिर, जब वह आएगा, तब वह अपने सिंहासन पर राज्य करेगा, जिसके चरणों में उसके सब शत्रु पड़े होंगे (प्रकाशितवाक्य 3:21)।

जो महिमा उसके पास अभी से है, वह सूर्य के समान फूट निकलेगी!

जैसे उसके स्वर्गारोहण का दिन निश्चय ही था, वैसे ही उसके फिर आने का दिन भी निश्चय ही होगा! यह सब हम बिलकुल निकट से अपनी आँखों से देखेंगे। हल्लेलूयाह!